शिक्षा संबल कार्यक्रम

ग्रीष्मकालीन आवासीय शिविर

माध्यमिक स्तर तक आते-आते बच्चों का वल्ड व्यू बढ़ने लगता है, विभिन्न आयामों में सोच बढ़ने लगती है। ऐसे समय में किसी एक स्त्रोत से नहीं बल्कि विविध प्रकार व संदर्भों से प्राप्त इनपुट्स इस व्यू व दृष्टिकोण को विस्तार देने में जरूरी भूमिका निभाते हैं।

सामान्यतः सरकारी विद्यालयों के बच्चों के शैक्षणिक व सह-शैक्षणिक इनपुट्स के संदर्भ व स्त्रोत बहुत सीमित होते है।परिवार में अशिक्षा, संसाधनों की कमी, जागरूकता की कमी के चलते आवश्यक एक्सपोजर नहीं मिलता और वे ज़माने की दौड़ में पिछड़ने लगते हैं।

इन्हीं इनपुट्स व एक्सपोजर को सुनिश्चित करने के लिएशिक्षा संबलकार्यक्रममें शामिल सरकारी विद्यालयों के चयनित बच्चों का 35 दिवसीय आवासीय शिविर आयोजित किया गया। 15 मई 2016 से आरम्भ हुआ यह शिविर 18 जून 2016 को बाल मेला व सांस्कृतिक आयोजन के साथ समाप्त हुआ। शिविर में कुल 70 बच्चों ने भाग लिया था।इन 70 में 28 लड़कियां थी। ज्यादातर बच्चे पहली बार अपने घरों से इतनी दूर व इतने दिनों के लिए बाहर निकले थे।

Location	Number of	
	GIRLS	BOYS
Zawar	15	-
Debari	-	10
Dariba	2	10
Chittor	8	14
Ajmer	-	4
Bhilwara	3	4
Total(70)	28	44

शुरूआत में अधिकांश बच्चों में आत्मविश्वास की कमी, कमजोर शैक्षणिक स्तर, कला में अरूचि थी।शिविर की शुरूआत में किए गए बेसलाईन टेस्ट से बच्चों के शैक्षिक स्तर का पता लगाया गया।

विद्या भवन के शिक्षक साथियों द्वारा 35 दिनों तक निरन्तर इन बच्चों के साथ काम किया गया। प्रातः 5:30 पर उठने से लेकर रात में 10 बजे सोने तक बच्चे शैक्षिक व सह-शैक्षिक गतिविधियों में संलग्न रहते थे।

मुख्य गतिविधियां : योग व शारीरिक व्यायाम,विज्ञान, गणित व अंग्रेजी विषयों का शिक्षण, पढ़ने व लिखने के कौशल का अभ्यास, खेलना, नृत्य, संगीत व नाटक सीखना, वन भ्रमण, ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमणआदि।

शिविर के अन्त में किए गए एंडलाईन टेस्ट में यह उभरकर आया कि बहुत सारे बच्चे जो शुरूआत में इन तीनों विषयों में कमजोर शैक्षिक स्तर पर थे, अन्त तक आते-आते वे बच्चे सीखने के बेहतर स्तर पर थे।

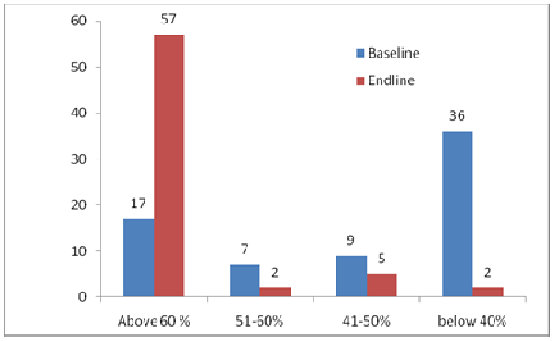

उदाहरण के लिएगणित विषय में बच्चों का प्रदर्शन बताता है कि जहां शुरूआत में 36 बच्चे चालीस फीसदी के नीचे थे अन्त में वहां केवल 2 बच्चे ही रहे।अच्छा प्रदर्शन करने वाले बच्चों की संख्या बढ़कर 17 से 57 हो गई।

सह-शैक्षिक गतिविधियों में भी बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सीमित समय में ही बच्चों ने नाटक की बारिकियों को सीखते हुए

नाटक तैयार किया। पंजाबी व राजस्थानी लोकनृत्य सीखा, राग आधारित गायन के साथ वाद्ययंत्र बजाना भी सीखा।

योग व व्यायाम

शैक्षिक भ्रमण

कलाएं